माफ़ी

की

तसल्ली

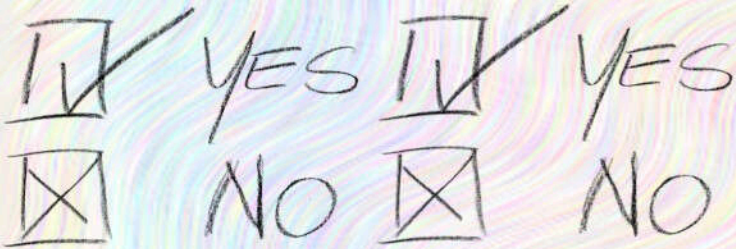

माफ़ी

की

तसल्ली

māfī kī tasallī

How Can We be Certain That Our Sins Have Been Forgiven?

by W. Miller
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

क्या आपको माफ़ी की तसल्ली है?

अज़ीज़ क़ारी, आपने ज़रूर कभी न कभी हक़ तआला से दरख़ास्त की होगी कि वह आपके गुनाह माफ़ करे और आपको सिराते-मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। लेकिन क्या आपको पक्का यक़ीन है कि बारी तआला ने आपको माफ़ कर दिया है? क्या कभी कभार आपके दिल में ख़याल आता है कि मेरे गुनाह इतने ज़्यादा हैं कि अल्लाह मुझे कभी भी माफ़ नहीं करेगा?

सिपाही की नाऊम्मीदी

एक जंग के दौरान चंद सिपाहियों ने एक गाँव को आग लगा दी। जब बेचारे देहाती अपनी जान बचाने के लिए अपने जलते हुए घरों को छोड़कर भागने लगे तो सिपाही उन्हें अपनी बंदूक़ का

निशाना बनाने लगे। अचानक एक बूढ़ी औरत किसी सिपाही की तरफ़ लपककर एक छोटे बच्चे को उसके क़दमों में डाल दिया और चिल्लाकर कहा, “इसे गोली मारो लेकिन याद रखो, अल्लाह उनसे जो उसकी मख़लूक़ को क़त्ल करते हैं कभी ख़ुश नहीं होता।”

सिपाही ने डर से सिसकते और बिलकते हुए बच्चे को अपने क़दमों में पड़े हुए देखा तो वह दम बख़ुद रह गया। अचानक उसे अपनी कररवाई से घिन आने लगी। चंद लमहों बाद जब उसके होशो-हवास क़ायम हुए तो उसने औरत से कहा, “अपने बच्चे को उठा लो। ख़ुदा की क़सम, अब से मैं किसी को क़त्ल नहीं करूँगा।”

इस तजरबे से सिपाही की आँखें खुल गईं, और वह अपने गुनाहों की सख़्ती महसूस करने लगा। वह चिल्ला उठा, “ख़ुदा मुझ जैसे क़ातिल को कैसे माफ़ करेगा?” उसके दिन रात इसी में गुज़रने लगे, और वह सख़्त मायूस हो गया। वह मदद के लिए अल्लाह से दुआ करना चाहता था मगर उसके गुनाहों की याद ने गोया उसके होंट सी दिए थे। बार बार उसे यही ख़याल सताता, “रोज़े-क़ियामत को मैं आदिलो-पाक परवरदिगार के सामने कैसे खड़ा हो सकूँगा? मौत के बाद मेरे साथ कैसा सुलूक किया जाएगा?” अब उसकी रूहानी अज़ियत नाक़ाबिले-बरदाश्त हो चुकी थी।

क्या आपको यक़ीन है कि ख़ुदा आपके गुनाह माफ़ कर देगा? बेशक आपने उस सिपाही की तरह बेक़ुसूरों को क़त्ल तो नहीं

किया होगा, लेकिन क्या आप ईमानदारी से यह कह सकते हैं कि मैं बेगुनाह हूँ?

कोई भी माफ़ी के लायक़ नहीं

कलामे-इलाही में मरक़ूम है कि न सिर्फ़ क़ातिल ही बल्कि जो अपने भाई पर ग़ुस्से हो वह अदालत की सज़ा के लायक़ है। जो उसे अहमक़ कहेगा वह आग के जहन्नुम का सज़ावार होगा। क्या आप कभी अपने भाई पर ग़ुस्से हुए हैं? कलामे-इलाही में यह भी लिखा है कि ज़िनाकारी का मतलब सिर्फ़ यह नहीं कि किसी गैरऔरत के साथ नाजायज़ ताल्लुक़ात ही क़ायम हों बल्कि किसी गैरऔरत की ख़्वाहिश भी ज़िनाकारी है। क्या आपने कभी अपने दिल में ज़िना कारी की है? हम सबको तसलीम करना पड़ता है कि हमने गुनाह किया है। ऐ ख़ुदा, हम पर रहम कर।

माफ़ी माँगना नाकाफ़ी है

लेकिन सवाल यह भी है कि क्या अल्लाह तौबा और माफ़ी माँगने पर हमें माफ़ कर देगा? हम जानते हैं कि ख़ुदा रहीम है। लेकिन साथ ही वह आदिल भी है। अगर अल्लाह तआला हर क़ातिल,

ज़िनाकार और दूसरे मुजरिम को उनके तौबा करने पर माफ़ कर दे तो उसका अदल कहाँ जाएगा? क्या कोई आदिल मुंसिफ़ किसी क़ातिल को उसके इस इक़रार पर छोड़ देगा कि उसने तौबा की है और आइंदा क़त्ल नहीं करेगा? नहीं, अदल का तक़ाज़ा है कि जुर्म की सज़ा दी जाए। इसी वजह से शरीअत फ़रमाती है कि गुनाह की सज़ा मौत है। न सिर्फ़ क़ातिल ही मौत का मुस्तहिक़ है बल्कि जिससे भी गुनाह सरज़द हुआ है वह मौत का सज़ावार है, ख़्वाह वह गुनाह कबीरा हों या सग़ीरा।

अल्लाह को ख़ुश रखना नाकाफ़ी है

दिल में सब जानते हैं कि वह अल्लाह की सज़ा के लायक़ हैं। नतीजतन वह अल्लाह को ख़ुश करने की कोशिश करते हैं ताकि वह उन्हें माफ़ करके एहसासे-जुर्म से रिहाई और उनके परेशान दिलों को तसल्ली बख़्शे। बाज़ औक़ात लोग किसी जानवर मसलन गाय या बकरे की क़ुरबानी इस उम्मीद पर चढ़ाते हैं कि अल्लाह इस जानवर की ज़िंदगी को उनकी अपनी ज़िंदगी के बदले में क़बूल करके उन्हें माफ़ कर देगा। जो अमीर हैं वह सख़ावत के काम करते हैं। वह ग़रीबों को ख़ैरात देते, देगें चढ़ाते, स्कूल बनाते या हस्पताल बनवाते हैं। मक़सद यह है कि अल्लाह उनके कामों को

देखकर उन पर रहम करे और उन्हें बख़्श दे। बाज़ अपने घर बार को छोड़कर गोशा-तनहाई इख़्तियार कर लेते हैं। वह जंगलों या ग़ारों में रहते हैं या दरवेश बनकर इधर उधर फिरने लगते हैं। बाज़ मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारत करते वक़्त पैदल या अपने घुटनों पर चलकर जाते हैं कि शायद अल्लाह को उनकी यह रियाज़त पसंद आए और उनके गुनाह बख़्श दिए जाएँ। कुछ लोग रात दिन इबादत में मशग़ूल रहते हैं। वह दुआ माँगते और रोज़े रखते हैं। बाज़ तो अपने जिस्मों को भी तरह तरह की तकलीफ़ें देते हैं कि शायद अल्लाह उन पर रहम करके माफ़ कर दे। लेकिन ख़्वाह वह कुछ भी करें, क्या माफ़ी के इन मुतलाशियों में से कोई भी यक़ीन के साथ यह कह सकता है कि अल्लाह ने मुझे माफ़ कर दिया है? ख़ुदा बेइनसाफ़ मुंसिफ़ नहीं है कि उसे रिश्वत देकर ख़रीदा जा सके। अल्लाह को ख़्वाह कितना ही क़ीमती तोह्फ़ा क्यों न दें तो भी हम अपने गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा नहीं कर सकते।

माफ़ी की तलाश

उस सिपाही से क्या हुआ जो बहुत-से बेगुनाहों को क़त्ल करने के बाइस एहसासे-जुर्म में मुब्तला था? उसने माफ़ी हासिल करने

के लिए क्या किया? वह फ़ौज से इस्तीफ़ा देकर दरवेश बन गया। वह तपती हुई धूप में गाँव गाँव फिरने लगा कि शायद इस तरह मैं अल्लाह की तलाश की प्यास बुझा सकूँ। बिलआख़िर एक स्टेशन पर उसकी एक आदमी से मुलाक़ात हुई जिसने उसकी राहनुमाई की। तब उसने उस रूहानी चश्मे से पिया जिससे उसे माफ़ी, इतमीनान और नई ज़िंदगी मिल गई। वह ज़िंदगीबख़्श चश्मा क्या था?

जिस आदमी से उसकी स्टेशन पर मुलाक़ात हुई थी वह उसे एक गाँव में ले गया जिस में हज़रत ईसा के चंद पैरोकार रहते थे। उनसे उसे मालूम हुआ कि

- ख़ुदा आदिल है, इसलिए वह मुझे उस वक़्त तक माफ़ नहीं कर सकता जब तक मेरे गुनाहों का मुनासिब कफ़्फ़ारा न दिया जाए।

- चूँकि इनसान इस क़िस्म का कफ़्फ़ारा अदा करने से क़ासिर है इसलिए अल्लाह ने ख़ुद ही इसका इंतज़ाम कर दिया। तमाम काइनात में सिर्फ़ एक ही हस्ती इतनी नेक और अज़ीम थी जो तमाम जहान के गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा कर सके और यह हस्ती हज़रत ईसा थे।

- हज़रत ईसा पर ईमान लाने से मेरे गुनाह माफ़ हो जाएँगे।

यों इंजील जलील में मरक़ूम है,

> अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इक्लौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। (यूहन्ना 3:16)

यह भी लिखा है,

> अगर हम अपने गुनाहों का इक़रार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे गुनाहों को माफ़ करके हमें तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। ...एक है जो ख़ुदा बाप के सामने हमारी शफ़ाअत करता है, ईसा मसीह जो रास्त है। वही हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा देनेवाली क़ुरबानी है, और न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि पूरी दुनिया के गुनाहों का भी।
> (इंजील मुक़द्दस, 1 यूहन्ना 1:9; 2:1-2)

हम सब मौत के हक़दार हैं। लेकिन हज़रत ईसा ने हमारे बदले में कफ़्फ़ारा दिया। उन्होंने अपनी जान हमारे बदले में सलीब पर दी ताकि जो उन पर ईमान लाए वह माफ़ी हासिल करे। वाक़ई यह एक अज़ीम ख़ुशख़बरी है।

जब उस साबिक़ सिपाही ने सुना कि हक़ तआला ने मुझे दोज़ख़ से बचाने के लिए क्या कुछ किया है तो वह हज़रत ईसा पर ईमान ले आया। नतीजतन उसका एहसासे-जुर्म जाता रहा और उसके परेशान दिल को इतमीनान मिल गया। अब वह कह सकता था,

> मुबारक है वह जिसके जरायम माफ़ किए गए, जिसके गुनाह ढाँपे गए हैं। मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा ...मैं बोला, "मैं रब के सामने अपने जरायम का इक़रार करूँगा।" तब तूने मेरे गुनाह को माफ़ कर दिया।
> (ज़बूर शरीफ़ 32:1-2,5)

क्या हमने माफ़ी को आसान बना दिया है?

बाज़ लोग एतराज़ करके कहते हैं कि "तुम ईसाइयों ने गुनाहों की माफ़ी को बहुत आसान बना दिया है। तुम जितने चाहो गुनाह करो अल्लाह तो तुम्हें हज़रत ईसा मसीह के वसीले से माफ़ कर ही देगा।" लेकिन यह इंजील जलील की तालीम नहीं है। वहाँ बयान किया गया है कि जो गुनाह करने में लगा रहता है वह हज़रत ईसा मसीह का नहीं है, बल्कि वह शैतान का फ़रज़ंद है। जो भी यह महसूस करता है कि हज़रत ईसा ने उससे इतनी मुहब्बत रखी

कि उसे गुनाह से बचाने के लिए अपनी जान क़ुरबान कर दी, वह अपने नजातदहिंदा का इस क़दर शुक्रगुज़ार होगा कि वह गुनाह से नफ़रत करेगा और मसीह को ख़ुश करने के लिए नेक और पाक ज़िंदगी बसर करेगा।

क्या हज़रत ईसा सलीब पर मरे?

कुछ यह भी कहते हैं कि हज़रत ईसा मसीह सलीब पर न मरे बल्कि ज़िंदा आसमान पर उठा लिए गए। बाज़ यह कहते हैं कि वह सलीब से ज़िंदा उतर आए और बहुत अर्से तक कश्मीर में रहे और वहीं फ़ौत हुए। बेहतर है कि आप इंजील जलील का मुतालआ करें जहाँ सब कुछ तफ़सील से बयान किया गया है। वहाँ लिखा है कि हज़रत ईसा ने अपने आपको रज़ाकाराना तौर पर अपने दुश्मनों के हवाले कर दिया। उन्हें उनके दुश्मनों और दोस्तों के रूबरू सलीब पर कीलों से जड़ा गया। मसलूब करनेवाले रोमी अफ़सर ने एलान किया कि वह वफ़ात पा चुके हैं। फिर उनके मुतअद्दिद शागिर्दों ने उन्हें दफ़न किया। लेकिन तीन दिन के बाद वह मुर्दों में से जी उठे और उनके बहुत-से शागिर्दों ने चालीस दिन के दौरान उन्हें मुतअद्दिद बार ज़िंदा देखा। इसके बाद वह आसमान पर सऊद

फ़रमा गए और अब वह वहाँ पर उन लोगों की शफ़ाअत करते हैं जो उन पर ईमान लाए हैं।

हज़रत ईसा का कफ़्फ़ारा यक़ीनी है

हम यक़ीन से यह किस तरह कह सकते हैं कि हक़ तआला ने हुज़ूर अल-मसीह के कफ़्फ़ारे को क़बूल कर लिया है और कि वह उन पर ईमान लानेवालों के गुनाह माफ़ कर देगा? इसका सबूत यह है कि अल्लाह ने उन्हें तीसरे दिन मुर्दों में से ज़िंदा किया। हज़रत ईसा का जी उठना इस बात को ज़ाहिर करता है कि ख़ुदा ने उनके वसीले से माफ़ी के वादे की तसदीक़ कर दी है।

क्या आपको यक़ीन है कि आपके गुनाह माफ़ हो चुके हैं? अगर आप शक में मुब्तला हैं और मौत और रोज़े-क़ियामत पाक ख़ुदा के सामने खड़े होने से ख़ौफ़ज़दा हैं तो आप भी हज़रत ईसा पर ईमान लाकर अपने गुनाहों की माफ़ी हासिल कर सकते हैं। उन्होंने आपका भी कफ़्फ़ारा दिया है। आप इस ख़ुशख़बरी पर ईमान लाएँ और हक़ तआला से दरख़ास्त करें कि वह आपको क़बूल करे। वह आपके गुनाह माफ़ कर देगा। तब आपको इतमीनान और अबदी ज़िंदगी का यक़ीन मिल जाएगा।